International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 12-02-2020; Accepted: 13-03-2020; Published: 14-04-2020
www.educationjournal.org
Volume 5; Issue 2; 2020; Page No. 14-15

यथार्थवाद के अंकन में काशीनाथ सिंह का कलात्मक हस्तक्षेप

विनय शंकर
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
यथार्थ और सत्य एक ऐसी दृष्टि है, जिसके उदय और बहुरूपात्मक विकास का ऐतिहासिक महत्त्व है। यथार्थ साहित्य का वह पहलू है, जिसने विशेष रूप से कथा की अंतर्वस्तु और संगठन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। यहाँ तक की कला–साहित्य के अनेक क्षेत्रों में उसकी छाप देखी जा सकती है। यथार्थ के संबंध में यह कथन बड़ा ही सत्य है, ''जो कुछ नहीं घटित हुआ वह उतना ही सत्य है, जो घटित हुआ है।'' हिंदी कहानी में 'यथार्थ' का अर्थ प्राकृतिक दृश्यों, तथ्यों, बाह्यवस्तु वर्णन तक ही समझा जाता था, परन्तु समकालीन कहानी जो 'यथार्थ' की ही कहानी है, उसका यथार्थ जीवन की अनेक तहों में लिपटा है। ये विभिन्न तहों सामाजिक, पारिवारिक संबंधो, दाम्पत्य, धर्म, राजनीति, साम्प्रदायिकता और जातीयता आदि की बहुआयामी है। यथार्थ एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। इसे रचनाकार की अंतिम मंजिल नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि कोई भी यथार्थ अंतिम नहीं हो सकता है। इस परिवर्तनशील जगत में सब कुछ परिवर्तित हो रहा है। समकालीन कहानी के बदलते नए परिवेश का यथार्थ ही अधिक उभरा है। यथार्थ अनेक रूपों में उद्घाटित होता रहता है, उसे सही समय पर पहचानने की आवश्यकता है। समकालीन कहानी नव–औपनिवेशिक विकास के भयावह यथार्थ का मुकाबला कर रही है और उससे टकरा रही है।

मूल शब्द: बहुरूपात्मक विकास, दाम्पत्य, धर्म, राजनीति, कलात्मक हस्तक्षेप

प्रस्तावना

नयी कहानी के कथाकारों ने जिस कलात्मकता के साथ जीवन के यथार्थ को कहानी के माध्यम से उजागर किया। इससे पूर्व के कथाकारों ने इस कलात्मकता के साथ जीवन के यथार्थ को उजागर नहीं किया था, लेकिन नयी कहानी की इस कला को तोड़ने और अधिक स्पष्ट व अलग तरह से कहने का कार्य साठोत्तरी हिंदी कहानी के कथाकारों ने किया। शुरूआती दौर की कहानी में मनोरंजन, तिलिस्मी–एय्यारी, जासूसी तथा रोमानी और ऐतिहासिकता का रूप–विधान दिखाई देता है तथा उसके आगे दौर में सामाजिकता, मनोविश्लेषण, व्यक्तिक्ता, स्त्री का अधिकार, ग्रामीण जीवन, राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिकता को बड़े ही यथार्थ रूप में व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। स्वतंत्रता के बाद बदलती तत्कालीन परिस्थितियों के साथ फैली सामाजिक, आर्थिक, सांप्रदायिक, सांस्कृतिक समस्याओं को उजागर किया। साठोत्तरी कहानी के कथाकारों में दूधनाथ सिंह, ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, काशीनाथ सिंह आदि ने कहानी को एक नया रूप दिया। ''मध्यवर्ग, निम्नवर्ग, उनकी खण्डित मानसिकता या उसकी विरूपता, महानगर का परिवेश, वहां का कृत्रिम जीवन, वैषम्य औद्योगीकरण, ग्रामीण समाज में परिवर्तन, राजनीतिक गिरावट, यही सब कहानी की मूल संवेदनाएँ हैं। 60–90 के मध्य के तीन दशक की कहानी भारतीय जीवन के समस्त बदलते रूपों की पहचान बन सकी है। रचनाकार के स्वानुभव, उसकी दृष्टि सभी इसमें है, चाहे वह दृष्टि समाजवादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषवादी या फिर मानवतावादी हो। उसमें मन के विविध रंग और गंध है, जन–जीवन को उसने सभी प्रकार के भेद–भाव से परे हटाकर उसके बहुआयामी पक्षों का विविधता और खुलेपन से कलात्मक बयान किया है।''(1)

काशीनाथ सिंह की दृष्टि किसी एक जगह न टिक कर हर गाँव, हर नगर व हर शहर तथा उसके चारों तरफ फैली ज़िंदगी का गंभीरता से अध्ययन करती है। इस गहन अध्ययन और तेज दृष्टि से ही वह जीवन के यथार्थ को अपने कथा–साहित्य में अभिव्यक्त करते हैं। काशीनाथ सिंह व्यक्ति और उसके यथार्थ पर विचार विमर्श करने के साथ–साथ उसकी जिंदगी को पढ़ते हैं, जिसके कारण जब हम उनकी कहानियां पढ़ते हैं, स्वयं (अपने–आप) को उसमें पाते हैं। उनकी कहानी हर व्यक्ति के अपने यथार्थ जीवन की कहानी होती है, जिससे वह जूझ रहा है। काशीनाथ सिंह के कथा–साहित्य के विषय में कुमार कृष्ण का विचार है कि ''काशी और कहानी एक–दूसरे के पर्याय हैं। काशीनाथ सिंह का कहानी कहने का एक अलग अंदाज है। मुझे लगता है कि यह अंदाज बनारस की बानी और गंगा के पानी ने उनको दिया है। उनकी कहानियों में हम धोती–कुर्ता, गमछा, लगोंट पहने हुए एक जीते–जागते मनुष्य को देख सकते हैं। बनारसी वर्दी और बनारसी मस्ती के साथ। ऐसा लगता है कि काशीनाथ सिंह काशी की गलियों, चायघरों, राशन की दुकानों, हवेलियों–मकानों, बुनकरों, हरकारों, हलवाहों, मजदूरों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, बाबुओं, मंत्रियों, सिपाहियों, वकीलों से चुपचाप कहानियाँ चुराते हैं, फिर उनको ग्रामीण रागात्मक बोध में पिघलाकर एक खाँटी लोहार की तरह नये–नये औजारों के रूप में पाठक को सौंप देते हैं। यह औजार जहाँ एक ओर हमारी सोच को पैना करते हैं, वहीं दूसरी ओर अपने समय को समझने और उसे बदलने के लिए ऊर्जा भी देते हैं। काशीनाथ सिंह की कहानियाँ हमारे भीतर आत्मविश्वास, साहस और संघर्ष पैदा करने के बीज बोती हैं।''(2)

काशीनाथ सिंह ने जीवन को जीवन की तरह जिया और समझा है। वह जन की बात जन की भाषा में ही सरलता के साथ करते नजर आते हैं। बिना किसी लाग–लपेट के वह ऐसी बात प्रस्तुत करते हैं कि हू–ब–हू उसका चित्र हमारे सामने उभरकर आ जाता है। वह कहते हैं कि ''मेरी शुरूआत ही यहाँ से हुई थी कि महज लिखने के लिए मत लिखो। फालतू, बेमतलब और भर्ती का तो कतई नहीं; नई कहानी हो या किसी दौर की कहानी प्रवाह या कथाकार में बहने की जगह तैरना सीखो, डूब जाने के खतरे उठाकर भी तैरो और विवेक के बलबूते आगे–पीछे, अगल–बगल देखकर, सोच–समझकर और अपनी ओर से कोशिश मैंने यही

की।''(3)

काशीनाथ सिंह का यही नज़रिया उनको साठोत्तरी हिंदी कहानी के अन्य कथाकारों से अलग करता है, जिनका अपना अनुभव, अपना शिल्प दूसरों से अलग है। यह काशीनाथ सिंह की कहानी कहने की कला है, जो उन्हें श्रेष्ठ और अन्य कहानीकारों से अलग पहचान दिलाती है। यह कला उनकी कहानियों में विशेष रूप से देखी जा सकती है। काशीनाथ सिंह की कहानी कहने की कला, जिसे पढ़ते समय उस वातावरण का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत होता चलता है। पाठक उस दृश्य में डूब जाता है और आनंद की अनुभूति प्राप्त करता है। काशीनाथ सिंह कहानी कहते समय ऐसा वातावरण बनाते हैं कि पाठक कहानी को पढ़ने के लिए उत्सुक रहता है कि आगे क्या होगा। उनकी भाषा सरल और स्वाभाविक है, जो पाठक को संजोए रहती है।

काशीनाथ सिंह साठोत्तरी हिंदी कहानी के उन श्रेष्ठ कथाकारों में से एक हैं, जो फिजूल, बेमतलब का तो बिल्कुल नहीं लिखते है। वे अपने अनुभवों के आधार पर चारों तरफ फैली जिंदगी को पढ़ते और अपनी कहानी में अलग–अलग ढंग के शिल्प गढ़ते हैं। काशीनाथ सिंह की अपनी एक अलग पहचान इसलिए भी है कि वह जो भी बात कहते हैं, वह जन की भाषा में कहते हैं। चाहे वह व्याकरण की दृष्टि से मानवीय हो या न हो। उनके कहानी–उपन्यासों में ऐसे वाक्य एवं शब्दों का भी प्रयोग हुआ है, जो व्याकरण की दृष्टि से मान्य नहीं है, लेकिन लोक में प्रचलित है, जिससे उनका शिल्प उच्चस्तरीय होता है और समाज का यथार्थ रूप उभर कर सामने आता है। यही कारण है कि साठोत्तरी हिंदी कहानी के कथाकारों में अधिक विविधतापूर्ण और वस्तुपरक कहानियों के लिए काशीनाथ सिंह सबसे पहले पहचाने जाते हैं, ''वे इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं कि उन्होंने निरंतर अपने यथार्थबोध को प्रखर बनाए रखा है और आधुनिक कथाशिल्प की खूबियाँ समझते हुए भी कहानी के गद्य के खास जातीय स्वरूप को विकसित करने के लिए यथेष्ट संघर्ष किया है।''(4)

काशीनाथ सिंह की कहानियों में अलगाव, बेगानेपन और निस्संगता की भयावह स्थितियाँ और वास्तविकता कठोर रूप में देखने को मिलती है। उनकी कहानियों के विषय में यह राय काफी हद तक सच है कि उनकी कहानी में ये रूप–विधान अपने–अपने तरीके से यथार्थ रूप में ही अभिव्यक्त हुए हैं, जब पाठकगण इनकी कहानियों को विधिवत रूप से एकाग्रत होकर जानना चाहेगा, तभी वह इस यथार्थ से अभिभूत हो सकेगा। काशीनाथ सिंह की कहानियों के विषय में परमानंद श्रीवास्तव का कहना है, ''पाठक अक्सर उस सच्चाई के सामने होंगे जिसे सच्चाई मानने पर से पैरों तले की जमीन खिसक जाएगी।''(5) नए आदमी का अलगाव, जिन सामाजिक, राजनीतिक रिश्तों के उलझनों, अव्यवस्थाओं और तर्कहीनता से पैदा होता है। उस सबका यथार्थ रूप इनकी कहानियों में देखा जा सकता है।

काशीनाथ सिंह की कहानियाँ और उनका रूप–विधान अपने–आप में एक आकर्षण लिए हुए है, जिसे देख या जानकर पाठकगण चुंबक की तरह खिंचा चला आता है और उसका उस पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बनारसी बीजगणित से मनुष्य की खतूबदानी खोलनेवाला कहानीकार काशीनाथ सिंह हैं। विजयमोहन सिंह इनको 'आधुनिक क्लैसिकल अंदाज की कहानियाँ कहते हुए लिखते हैं, '''जंगल जातकम' जैसी बेख्तियन' पैराब्लॉस' के कौशल पर आधारित कहानियों से लेकर 'सुधीर घोषाल' जैसी घोषित राजनीतिक प्रतिबद्धता की कहानी में भी कहानी रचने का वही आधुनिक क्लैसिकल अंदाज है, जो चेखव, टॉलस्टॉय तथा गोर्की की महारत–हासिल कहानियों में मिलता है।''(6)

काशीनाथ सिंह के लेखन में निरंतर एक नया रूप देखा जा सकता है, जैसे–जैसे उनका लेखन कार्य बढ़ता गया, वैसे–वैसे उनकी लेखन प्रक्रिया में परिपक्वता आती गई। उनकी तमाम कहानी कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से एक–दूसरे के आगे की कहानियाँ हैं। कहानी की वास्तविकता को समझना, वह क्या चाहती है और उसको गढ़ना, हर कहानीकार के वश की बात नहीं है। मनोरंजन, पक्षी–पशुओं पर कहानी लिखना एक अलग बात है तथा कहानी के लिए कहानी लिखना, जीवन की सार्थकता को समझना और उसे उजागर करना, यह हर किसी के लिए आसान नहीं। काशीनाथ सिंह ने जीवन की सच्चाई को जाना और कहानी में कहानीपन व उसकी सार्थकता को बनाए रखा। यह कार्य वही लेखक कर सकता है, जिसने जीवन को जाना हो, उसमें डूबा हो और उसके हर पहलू से भली–भाँति परिचित रहा हो। ऐसा कथाकार कोई और नहीं काशीनाथ सिंह है।

निष्कर्ष

काशीनाथ सिंह की रचना प्रक्रिया में निरंतर प्रौढ़ता तथा शिल्प के अनेक नए रूप देखे व परखे जा सकते हैं। लगातार लेखन प्रक्रिया तथा ज़िंदगी की पहचान और अनुभव ही किसी कथाकार को एक प्रौढ़ साहित्यकार बनाता है। जिस आत्मीयता और विश्वास के साथ काशीनाथ सिंह समाज, नगर, शहर और ग्रामीण जीवन को, दिखाने का साहस करते हैं, वह पूरी शक्ति व बल के साथ उभरता भी है। वह समाज और देश में फैले उस यथार्थ को दिखाते हैं, जिससे हर भारतीय नागरिक जूझ रहा है। वह निरंतर कोशिश भी करता है कि इससे निकल जाए लेकिन आज बढ़ती आधुनिक तकनीक, ग्लोबलाइजेशन का दुष्प्रभाव, राजनीति और भ्रष्टाचार में गोते लगाने लगता है और चाह कर भी नहीं निकल पाता। इन्हीं सब प्रसंगों को अलग–अलग ढंग से अपने कथा–शिल्प एवं रूप–विधानों में ढालकर उपन्यास, कहानी आदि में कलात्मक हस्तक्षेप करते हैं काशीनाथ सिंह।

संदर्भ–स्रोत

1. अरोरा, ज्ञानवती : समकालीन हिंदी कहानी यथार्थ के विविध आयाम, हिंदी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, संस्करण : 1994, पृ. 80
2. कृष्ण, कुमार : कहानी के नए प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 108–109.
3. श्रीवास्तव, परमानंद : उपन्यास के विरुद्ध उपन्यास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ. 147.
4. श्रीवास्तव, परमानंद : कहानी की रचना प्रक्रिया, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ. 246–247.
5. सिंह, यदुनाथ : समकालीन कहानी : प्रकृति और परिदृश्य, चित्रालेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978, पृ. 20
6. कृष्ण, कुमार : कहानी के नए प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 111